ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो वसून्याभर।।

- अथर्ववेद 6/63/4

हे परमेश्वर हमें धन-धान्य प्राप्त करावें।

O Lord ! Bestow upon us wealth & Prospevity.

वर्ष 41, अंक 32 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 मई, 2018 से रविवार 3 जून, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म्

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

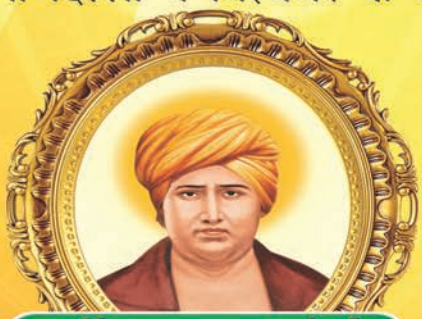

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

दिल्ली (भारत)

25 से 28 अक्टूबर 2018

तदनुसार कार्तिक कृष्ण १, २, ३, ४ विक्रमी संवत् २०७५

-: सम्मेलन स्थल :-

स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली, भारत

महासम्मेलन में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।
संगठनात्मक एकता हेतु लाखों की संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

सुंदर व्यवस्था हेतु सम्मेलन में आने से पूर्व महासम्मेलन कार्यालय में अपना पंजीकरण अवश्य करा लें।
पंजीकरण वैबसाईट पर भी किया जा सकता है। आगंतुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।

अपील :- महासम्मेलन की सफलता हेतु " दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-महासम्मेलन-2018" के नाम से क्रास चैक / ड्राफ्ट सम्मेलन कार्यालय के पते पर भेजने की कृपा करें।

महासम्मेलन हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान/सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है

निवेदक

सुरेश चन्द्र आर्य	महाशय धर्मपाल	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य
प्रधान	अध्यक्ष	मंत्री	सम्मेलन संयोजक
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा	स्वागत समिति	सा. आर्य प्रतिनिधि सभा	प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
+91 9824072509	+91 11 25937987	+91 9826655117	+91 9810061763

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 91-11-23360150, 23365959
E-mail : aryasabha@yahoo.com, Website : www.aryamahasammelan.org
You Tube thearyasamaj 9540045898

पहुँचने का मार्ग - दिल्ली मैट्रो के रिठाला अथवा बादली स्टेशन पर उतर कर सम्मेलन स्थल पर पहुंचा जा सकता है ।

वेद-स्वाध्याय

प्रकृति माता का अद्भुत चमत्कार

एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे। तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम्।। -ऋ. 10/114/4
ऋषिः **सधिर्वैरूपो धर्मो वा तापसः।।** देवता - **विश्वेदेवा।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ- एकः सुपर्णः = एक सुपर्ण पक्षी है **सः** = वह **समुद्रम्** = इस संसारन्तरिक्ष के समुद्र में **आविवेश** = आया है **सः** = वह (अन्तरिक्ष में विहार करता हुआ) **इदं विश्वं भुवनम्** = इस सम्पूर्ण संसार को **विचष्टे** = विविध प्रकार से देखता है, इसका मज़ा लेता है, परन्तु **तम्** = उसे **पाकेन मनसा** = परिपक्व ज्ञानवाले मन से **अन्तितः** = समीपता से **अपश्यम्** = देखा है तो मैं देखता हूं कि **तम्** = उसे **माता** = माता **रेळिह** = चूम रही है **सः उ** = और वह **मातरम्** = माता को **रेळिह** = चाट रहा है।

विनय- संसार में आया हुआ जीव क्या है? यह एक सुपर्ण पक्षी है जो अन्तरिक्ष-समुद्र में विहार करने आया हुआ है। यह अपने ज्ञान और कर्म के पंखों से इधर-उधर उड़ता हुआ इस सब भुवन को विविध प्रकार से देखने का आनन्द ले-रहा है। संसार-सागर में मनोमयादि सूक्ष्म संसारान्तरिक्ष में एक योनि से दूसरी योनि में भोग भोगने के लिए फिरता हुआ और वहां विविध प्रकार के भगों को प्राप्त करता हुआ यह जीव गति कर रहा है, उड़ रहा है। अभी तक जीव को मैं इसी संसाराकाश के विकारी सुपर्ण के रूप में देखता रहा हूं, पर आज समीपता से देखा है, ज्ञान परिपक्व हुए मन से इसे समीपता से देख रहा हूं, तो इस जीव-प्रकृति-संयोग को मैं और ही रूप में देख रहा हूं। मैं देख रहा हूं कि उसे माता चूम रही है और वह माता को चाट रहा है। प्रकृति माता-मैं कहूंगा परमेश्वरी प्रकृति-जीव से प्रेम कर रही है और जीव इस माता से सुख पा रहा है। जीव के प्रकृति से जुड़ने का, जीव के संसार में आने का यही रहस्य है। कई ऋषि कहते हैं कि जीव और प्रकृति का संयोग लूले और अन्धे का संयोग है, पर यह बात शायद परमेश्वरहीन प्रकृति के विषय में होगी। परमेश्वरी प्रकृति तो अन्धी नहीं हे। मुझे तो यह सम्बन्ध माता और पुत्र का लगता है। इसलिए यह सम्बन्ध केवल भोग में नहीं किन्तु अपवर्ग में (अपवर्ग के भोग में) भी बना रहता है। पुत्र माता के बिना नहीं रह सकता और माता पुत्र को चाहती है। ऋषि ने ठीक कहा है ''पृथिवी सब भूतों को मधु है और सब भूत पृथिवी को मधु हैं।'' वास्तव में दोनों एक-दूसरे से सुख पा रहे हैं और एक-दूसरे को सुख दे रहे हैं क्या हम ही प्रकृति से सुख पाते हैं और प्रकृति हमसे सुख नहीं पाती? नहीं। तनिक प्रकृति को बेजान मत समझो, प्रकृति को ''परमेश्वर की प्रकृति'' के रूप में देखो।

1. प्रसिद्ध मधुविद्या के ऋषि दध्यङ् आथर्वण के ये वचन हैं, दखों बृह. उ. अध्याय 2 का पञ्चम ब्राह्मण।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सड़क पर नमाज तो मस्जिदों में क्या?

....भारत से लेकर यूरोप और अमेरिका तक आये दिन लोगों को सड़क और सार्वजनिक स्थानों पर इबादत के तरीके पर शिकायत खड़ी होती रहती है। हाल के वर्षों में, पश्चिमी यूरोप में सार्वजनिक स्थानों पर इस्लाम की बढ़ती परछाई पर कई सामाजिक बहस शुरू हुई हैं। कुछ समय पहले फ्रांस की सरकार ने पेरिस उपनगर में सार्वजिनक स्थानों पर प्रार्थना करने से उस समय मुसलमानों को रोक दिया था....

प्रश्न यह है कि नमाज चलती सड़क या पार्क में हो जाती है तो पिछले काफी समय से अयोध्या में मस्जिद बनाने की जिद्द क्यों हाल ही में साइबर सिटी गुरुग्राम में जगह को लेकर नमाज विवाद ने काफी रफ्तार पकड़ी थी जिसके बाद शुक्रवार की नमाज को लेकर जिला प्रशासन ने 23 सरकारी स्थान खुले में नमाज के लिए तय किए हैं। जबकि पहले सिर्फ नौ स्थान दिए जा रहे थे। इसी बीच मुस्लिमों की तरफ से पार्कों में योग, सड़क पर कांवड़ और रात्रि जागरण पर भी सवाल उठाये गये। यह सवाल इसी तरह थे जैसे पिछले वर्ष कई थानों में मनाई गयी जन्माष्टमी के बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ ने कहा था कि यदि वे ईद के दौरान सड़कों पर अदा की जाने वाली नमाज को नहीं रोक सकते हैं तो उन्हें थानों में मनाये जाने वाली जन्माष्टमी को भी रोकने का अधिकार नहीं है।

पर क्या इससे सवाल और तर्क खत्म हो गये शायद नहीं बल्कि इस घटना ने एक साथ कई सवालों को जन्म दे दिया है। पिछले साल मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर देर रात नमाज अदा करने को लेकर तब विवाद हो गया था जब कुछ मुस्लिम यात्री एयरपोर्ट पर गैंगवे में - बीच रास्ते पर ही नमाज पढ़ने बैठ गए। इससे बाधा उत्पन्न होने के चलते कुछ यात्रियों ने विरोध किया जबकि एयरपोर्ट पर नमाज के लिए विशेष रूम की व्यवस्था भी है। इसके बाद विनीत गोयनका नाम के यात्री ने इस पर आपत्ति उठाई थी कि जब नमाज अदा करने के लिए अलग से रूम की व्यवस्था है तो किसी को बीच रास्ते में नमाज अदा करने क्यों दे रहे हो? अगर इन्हें अनुमति दे रहे हो तो मुझे भी पूजा की अनुमति दो?

इसके बाद सोशल मीडिया पर तीन तस्वीरें वायरल हुई थी जिनके जरिए दावा किया गया था कि नमाज पढ़ने के लिए दिल्ली के एक रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर ही कब्जा कर लिया गया है। रस्सी से उस जगह को घेरने के बाद मोटे-मोटे अक्षरों में लिख दिया गया था कि 'प्लेटफार्म के इस हिस्से में यात्रियों की नो एंट्री है।' यहां के कुली और यात्रियों को मिलाकर लगभग 10-12 लोग यहां नमाज पढ़ने आते थे। ये तो जगह की बात थी लेकिन इस खबर ने भी लोगों को काफी चौंकाया था जब हरियाणा के मेवात के एक स्कूल में दो हिन्दू बच्चों को जबरन नमाज पढ़वाने का मामला सामने आया था यह आरोप वहां के एक स्कूल के तीन टीचरों पर लगा था।

इससे पहले कि मैं आगे लिखूं आप एक और घटना जान लीजिए। कई रोज पहले मुंबई के एंटाप हिल इलाके में एक 15 साल की नाबालिग बच्ची को मार दिया गया था वजह सिर्फ इतनी थी कि उसने जुमे की नमाज नहीं पढ़ी थी। मारने वाली उसकी सगी मामी ही थी, जिसने दुपट्टे से गला घोंटकर उसे मार डाला था। माना कि नमाज इस्लाम की प्रार्थना उपासना प्रणाली का एक अभिन्न हिस्सा है लेकिन इसमें प्रश्नचिन्ह यही है जब इस्लामवादी धर्म की सामाजिक तौर पर स्वतंत्रता की बात करते हैं तो प्रार्थना में जबदस्ती क्यों?

दरअसल ये दिक्कत सिर्फ भारत में नहीं है भारत से लेकर यूरोप और अमेरिका तक आये दिन लोगों को सड़क और सार्वजनिक स्थानों पर इबादत के तरीके पर शिकायत खड़ी होती रहती है। हाल के वर्षो में, पश्चिमी यूरोप में सार्वजनिक स्थानों पर इस्लाम की बढ़ती परछाई पर कई सामाजिक बहस शुरू हुई हैं। कुछ समय पहले फ्रांस की सरकार ने पेरिस उपनगर में सार्वजिनक स्थानों पर प्रार्थना करने से उस समय मुसलमानों को रोक दिया था जब शुक्रवार की प्रार्थनाओं में सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करने वाले मुस्लिमों के विरोध में लगभग 100 फ्रांसीसी राजनेता पेरिस उपनगर में एक सड़क पर उतर आये थे।

एक तरफ आज इस्लाम को मानने वाले अपने लिए समान अवसर मांगते है दूसरी तरफ पहनने के लिए अपना धार्मिक परिधान, कार्यालयों पर अलग से प्रार्थना आवास मांगते हैं, दैनिक प्रार्थना के लिए अपने समय या स्थान को अलग करते हैं, दूसरों से अपनी पहचान और व्यवहार में धर्मनिरपेक्षता चाहते हैं लेकिन अपनी मजहबी पहचान को दर्शाना शान समझते हैं। इस मामलें में भी नमाज से योग और कांवड की बार-बार तुलना करना यही साबित कर रहे थे कि हम सही हैं। हालाँकि कांवड वर्ष में एक बार लायी जाती है जिसके लिए सरकार आम लोगों को परेशानी न हो ध्यान रखती है। कांवड दिन में पांच बार नहीं लायी जाती न हर सप्ताह और योग को धर्म से जोड़कर देखा जाना ही गलत है जो लोग योग को बहुसंख्यक लोगों से जोड़कर देख रहे हैं यह उनकी बौद्धिक क्षमता पर सवाल खड़े करता है।

इस्लाम में आम हालात में लोगों का सड़कों पर बैठना पसंद नहीं फरमाया और लोगों को तिजारत वगैरह जायज जरूरतों की वजह से वहां बैठने की इजाजत दी भी तो कुछ शर्तों के साथ कि वे रास्ता चलने वालों का हक न मारें, उनके लिए परेशानी खड़ी न करें अब जहाँ सवाल यह होना था कि क्या सरकारी सड़क पर कब्जा करना एक गैर-इस्लामी और हराम काम नहीं है? क्या नाजायज कब्जे वाली जमीन पर नमाज पढ़ना भी नाजायज नहीं है? इसके जवाब के उलट दूसरों की धार्मिक उत्सवों पर सवाल खड़े किये जा रहे हैं। मैं यह नहीं कहता सड़क पर जागरण या बारात लेकर नाचना कूदना सही है वह भी गलत है क्योंकि अपने मनोरंजन सुख और आनंद के लिए किसी दूसरे को परेशानी हो, गलत है।

मेरा हमेशा से विश्वास है कि हमें एक-दूसरे की मान्यताओं और भावनाओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए न कि तुलनात्मक रमजान के महीने में विभिन्न दीनी संस्थाएं लोगों को रोजे के कायदे-कानून समझाने और उनसे चन्दे की अपील करने के लिए कैलेंडर आदि छापते-बांटते हैं। इन संस्थाओं को रमजान के महीने में 'सड़क पर नमाज की अदायगी' जैसे सामाजिक मुद्दों पर भी दीनी हुक्म प्रकाशित और प्रचारित करना चाहिये। मस्जिदों के इमामों को भी लोगों को सही जानकारी देनी चाहिये। इबादत शांति चाहती न कि दिखावा! इबादत भीड़ में नहीं बल्कि अकेले में हो शायद इसी वजह से अब लोग सवाल उठा रहे हैं कि जब नमाज रेलवे स्टेशनों, एयरपोर्ट, पार्कों, सार्वजनिक स्थानों, सड़कों, कार्य स्थलों और स्कूलों में अदा कर ली जाती है तो मस्जिदों में क्या होता है?

- सम्पादकीय

बंगाल हिंसा : न पहली बार न आखिरी

.....वर्ष 1977 से 1996 तक पश्चिम बंगाल में 28,000 लोग राजनीतिक हिंसा में मारे गये थे। ये आंकड़े राजनीतिक हिंसा की भयावह तस्वीर पेश करते हैं। समझ नहीं आता एक राज्य में सत्ता पाने की इस लड़ाई को हिंसा कहें या फिर मौत के आंकड़े देखकर मध्यकाल का कोई युद्ध कहें!....

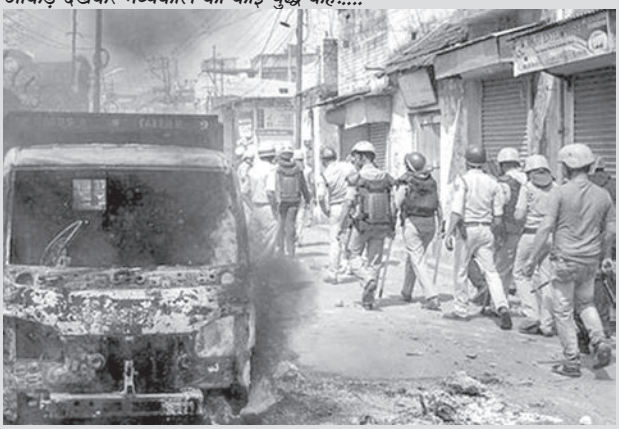

लगता है बंगाल के भाग्य में अब आगे सिसकना ही लिखा है। एक समय गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर और नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे अनेकों विद्वान और देशभक्त देने वाली धरा अब बस राजनितिक और मजहबी गुंडों की भूमि बनकर रह गयी। पिछले दिनों रामनवमी पर धार्मिक हिंसा की शिकार पश्चिम बंगाल के आसनसोल में रहने वाली सोनी देवी किस तरह रोते हुए अपना जला हुआ घर दिखाते हुए कह रही थी कि मेरा घर बर्बाद हो गया, एक बना-बनाया संसार बर्बाद हो गया। बच्चा लोग को लेकर अब हम कहां जाएंगे? उसका सवाल अभी तक मेरे जेहन में गूंज ही रहा था कि अचानक से बहुत सारे सवाल चीत्कार कर उठें। पश्चिम बंगाल में पंचायत चुनाव में नामांकन के दिन से जो हिंसा शुरू हुई थी, वह पोलिंग के दिन बड़ा रूप धारण करती नजर आई। वोटिंग शुरू होने के बाद से ही कई इलाकों से बम धमाके, मारपीट, मतदान पेटी जलाने, बैलेट पेपर फेंकने और फायरिंग जैसी हिंसक घटनाओं की खबरें गूंजती रहीं। करीब 12 लोगों की मौत और घायल हुए लोगों की संख्या देखकर आसानी से पता लगाया जा सकता है कि पश्चिम बंगाल में कानून व्यवस्था किस हाल में है। हिंसा किस दर्जे की थी इसका अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि दक्षिणी 24 परगना में एक राजनैतिक पार्टी के कार्यकर्ता को जिंदा तक जला दिया गया।

आखिर चुनाव में व्यापक सुरक्षा इंतजाम किये जाने और पश्चिम बंगाल और पड़ोसी राज्यों से 60 हजार से ज्यादा सुरक्षाकर्मी तैनात किये जाने के बावजूद इतनी हिंसक झड़प कैसे हुई? जिम्मेदार राज्य सरकार है या ये नाकामी बोझ एक बार राजनितिक भाड़े के हत्यारे के सर पर रख दिया जायेगा? हालाँकि एक बार फिर दिखावे के लिए कुछ धरपकड़ तो होगी ताकि आम लोगों के अन्दर कानून का डर बना रहे लेकिन सजा के नाम पर अंत वही ढाक के तीन-पात वाली कहावत होगी। क्योंकि बंगाल में जब पहले वामपंथी सरकार थी तब विपक्ष में खड़े होना चुनाव लड़ना यानि मौत को दावत देना था आज वही कार्यकर्ता ममता बनर्जी के खेमे में आ गये तो आज अन्य दलों के लिए वही स्थिति बनी हुई है।

राजनितिक और धार्मिक हिंसा के इस रक्तरंजित इतिहास को लेकर यदि थोड़ा पीछे जाये तो नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (एन.सी.आर.बी.) के आंकड़े इसकी गवाही देते हैं। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2016 में बंगाल में राजनीतिक कारणों से झड़प की 91 घटनाएं हुईं और 205 लोग हिंसा के शिकार हुए। इससे पहले यानी वर्ष 2015 में राजनीतिक झड़प की कुल 131 घटनाएं दर्ज की गई थी और 184 लोग इसके शिकार हुए थे। वर्ष 2013 में बंगाल में राजनीतिक कारणों से 26 लोगों की हत्या हुई थी, जो किसी भी राज्य से अधिक थी। 1997 में वामदल की सरकार में गृहमंत्री रहे बुद्ध देव भट्टाचार्य ने विधानसभा में जानकारी दी थी कि वर्ष 1977 से 1996 तक पश्चिम बंगाल में 28,000 लोग राजनीतिक हिंसा में मारे गये थे। ये आंकड़े राजनीतिक हिंसा की भयावह तस्वीर पेश करते हैं। समझ नहीं आता एक राज्य में सत्ता पाने की इस लड़ाई को हिंसा कहें या फिर मौत के आंकड़े देखकर मध्यकाल का कोई युद्ध कहें!

वैसे देखा जाये तो बंगाल में 24 परगना समेत जिन हिस्सों में ज्यादा हिंसा हुई है वहां का धार्मिक समीकरण किसी से भी अदृश्य नहीं है। कई हिस्सों में 27 से लेकर 50 फीसदी तक मुस्लिम है जिनको ममता सरकार का पूरा आशीर्वाद प्राप्त है। प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रकार जेनेट लेवी कहती है इस्लाम के नाम पर दूसरे वर्ग के खिलाफ उकसाने के लिए 27 फीसदी आबादी काफी होती है। लेकिन इसके इतर राजनितिक मामलों के विश्लेषक डॉ. विश्वनाथ चक्रवर्ती इसकी व्याख्या करते हुए कहते हैं, 'बंगाल में कम उद्योग-धंधे हैं, जिससे रोजगार के अवसर नहीं बन रहे हैं जबकि जनसंख्या बढ़ रही है। खेती से बहुत फायदा नहीं हो रहा है। ऐसे में बेरोजगार युवक कमाई के लिए राजनीतिक पार्टी से जुड़ रहे हैं ताकि पंचायत व नगरपालिका स्तर पर मिलने वाले छोटे-मोटे ठेके और स्थानीय स्तर पर होने वाली वसूली भी उनके लिए कमाई का जरिया है। वे चाहते हैं कि उनके करीबी उम्मीदवार किसी भी कीमत पर जीत जाएं। इसके लिए अगर हिंसक रास्ता अपनाना पड़े, तो अपनाते हैं। असल में यह उनके लिए आर्थिक लड़ाई है।' चक्रवर्ती आगे बताते हैं, 'विधि-शासन में सत्ताधारी पार्टी का हस्तक्षेप भी राजनीतिक हिंसा में बढ़ा है इसके लिए अगर हिंसक रास्ता अपनाना पड़े तो अपनाते हैं। पिछले कुछ सालों से देखा जा रहा है कि कानून व्यवस्था को सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस ने अपनी मुट्ठी में कर लिया है और कानूनी व पुलिसिया मामलों में भी राजनीतिक हस्तक्षेप हो रहा है। यही वजह है कि पुलिस अफसर निष्पक्ष होकर कार्रवाई नहीं कर पा रहे हैं।

सत्ताधारी पार्टी जो कर रही है, उससे साफ है कि वह विपक्षी पार्टियों से खौफ खा रही है। लेकिन, राजनीतिक लड़ाइयां लोकतांत्रिक तरीके से लड़ी जानी चाहिए। राज्य में राजनीतिक हिंसा भले ही नई बात न हो, लेकिन तृणमूल कांग्रेस विरोधी पार्टियों पर जिस तरह हमले कर रही है, वह बंगाल के लिए एकदम नया है। पहले यह सब छिप-छिपाकर होता था, लेकिन अब खुलेआम हो रहा है। ममता बनर्जी तानाशाह बनकर एक तरफ विपक्षी पार्टियों पर हमले करवा रही है और दूसरी तरफ नरेंद्र मोदी के खिलाफ लोकतांत्रिक फ्रंट भी तैयार करना चाहती है। ऐसे में उन पर यह सवाल उठेगा कि लोकतांत्रिक फ्रंट बनाने वाली ममता बनर्जी खुद कितनी लोकतांत्रिक हैं। हालाँकि यह दुर्भाग्यपूर्ण है। किन्तु यह हिंसक घटना पश्चिम बंगाल में न तो पहली बार है और न आखिरी। कभी मजहबी उबाल तो कभी राजनितिक उफान चलता रहेगा। - ***राजीव चौधरी***

क्रान्तिकारियों की कथा

क्रान्ति-आन्दोलन और अस्त्र संग्रह

गतांक से आगे -

अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के मुताबिक़ देश की समुद्री सीमा से बाहर का समुद्र किसी भी राष्ट्रीय नियम से मुक्त होता है, और उस सीमा के बाहर प्रत्येक जहाज़ की धरती उसी देश की धरती मानी जाती है, जिस देश का वह जहाज़ हो। तब भारत की समुद्र-सीमा तीन मील थी, अत: बिना किसी अड़चन के जर्मनी के ही विक्रय मूल्य पर इन पिस्तौलों का बण्डल वहीं छुड़ाया जा सकता था। यदि इसे कलकत्ता के बन्दरगाह पर लेते, तो 'सी' और 'लैण्ड' कस्टम्स विभागों द्वारा बड़ी छानबीन होती। सामान भी पकड़ा जा सकता था। इन्हीं सब उलझनों से बचने के लिए समुद्र में तीन मील अन्दर प्रवेश करके माल की डिलीवरी वहीं नक़द भुगतान करके ले ली जाए। फिर अंधेरा होने पर पार्सल भारत के किसी भी एकान्त स्थल पर लाया जाए।

रुपयों का इन्तजाम करने की ग़रज से 6 अगस्त, 1925 को दल के प्रमुख सदस्य शाहजहाँपुर में इकट्ठे हुए और तीसरे दिन 9 अगस्त को काकोरी के निकट 8 डाउन ट्रेन से जाते हुए सरकारी ख़ज़ाने पर हाथ साफ़ किया। क्रान्तिकारियों के हाथ लगे हाथ लगे 8600 रुपये। कुछ रुपया दल का क़र्ज चुकाने में खर्च हुआ। शेष रक़म लेकर शचीन्द्रनाथ बख़्शी और राजेन्द्र लाहिड़ी 'माउज़र' पिस्तौलों की डिलीवरी लेने कलकत्ता पहुंचे। शचीन्द्रनाथ बख़्शी बंगाल की खाड़ी में तैरकर तीन मील गये। नक़द भुगतान करक वहीं जहाज़ में 'माउज़र' पिस्तौलें हासिल कीं और फिर अंधेरे में उसी प्रकार तैरकर समुद्र तट पर आ गये।

इसी खेप में लायी गयी 'माउज़र' पिस्तौल की गोली से राजगुरु ने 18 दिसम्बर, 1928 को लाहौर में साण्डर्स का सिर चकनाचूर किया था। इसी खेप में लायी गयी एक 'माउज़र' 27 फ़रवरी, 1931 को एलफ्रेड पार्क, इलाहाबाद में 'हिन्दुस्तान सोशलिसट रिपब्लिकन आर्मी' के कमाण्डर-इन-चीफ अमर सेनानी चन्द्रशेखर 'आचाद' की अन्तिम साथी थी।

लखनऊ में कभी-कभी क्रान्ति के इस दीवने शचीन्द्रनाथ बख़्शी से भेंट हो ज़ाती थी। दमकते चेहरे पर वही उत्साह, वही उमंग। अब ये इस संसार में नहीं हैं लेकिन दिल में तो हमेशा रहेंगे ही।

- क्रमश:

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :
क्रान्तिकारी आन्दालन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्देलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2007 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1000/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण 2027 तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली : 25-26-27-28 अक्टूबर, 2018 की तैयारियां आरम्भ

प्रान्तीय सभाओं की बैठकों का दौर प्रारम्भ :

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इन्दौर में होगी प्रान्तीय बैठक

समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, आर्य शिक्षण संस्थानों, आर्य वीर, वीरांगना दल एवं सहयोगी संस्थाओं के अधिकारी अधिकाधिक संख्या में भाग लें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी में उन सभी आर्य सन्देश के पाठकों, आर्य समाज के सदस्यों और जो आर्य समाज के कार्यों के प्रशंसक हैं सभी महासम्मेलन की तैयारियों हेतु आमजनों को प्रेरित करना प्रारम्भ कर दें। साथ ही अपने प्रान्त की प्रतिनिधि सभाओं की बैठकों के लिए भी अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित होने के लिए कहें जिससे महासम्मेलन की हर स्तर से तैयारी पूर्ण हो सके। प्रान्तीय सभाओं की बैठकों का कार्यक्रम शीघ्र ही घोषित किया जाएगा। सभाएं उक्त तिथियों पर अपने प्रान्त स्तर पर अपने प्रतिनिधियों को ही नहीं बल्कि उन सभी लोगों को आमन्त्रित करें जो सम्मेलन में भाग लेने की इच्छा रखते हैं। इससे लोगों की भी भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी।

बैठक 10 जून 2018 को दयानन्दगंज इन्दौर में होगी

मध्य प्रदेश स्थित मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, आर्य शिक्षण संस्थानों, आर्य वीर, वीरांगना दल एवं सहयोगी संस्थाओं के अधिकारी बैठक 10 जून, 2018 को आर्यसमाज दयानन्दगंज इन्दौर में आयोजित की जा रही है।

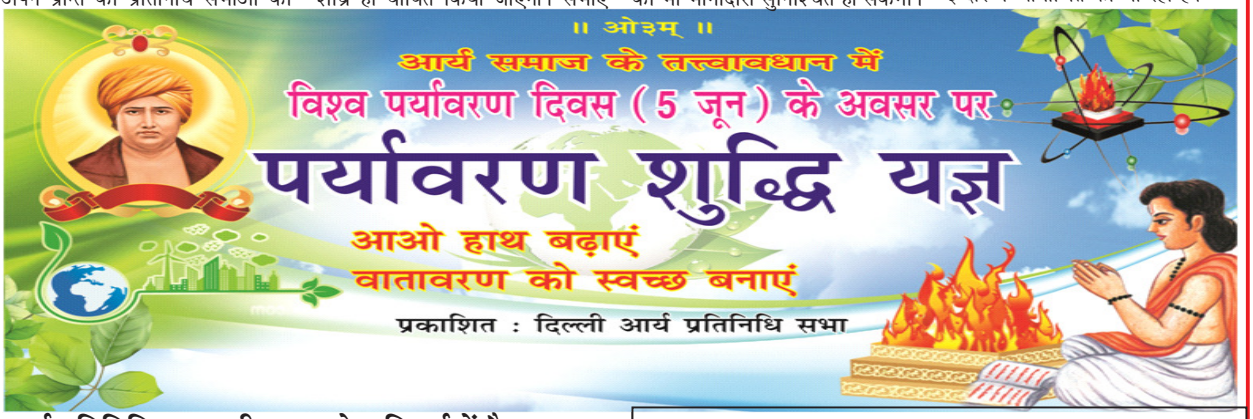

आर्य प्रतिनिधि सभा की मध्य प्रदेश विदर्भ में बैठक सम्पन्न

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सूचना एवं संगठन के कार्य से सभामन्त्री श्री प्रकाश आर्य नागपुर में आयोजित बैठक में उपस्थित हुए। बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. विधर्भ के प्रधान श्री सत्यवीरजी शास्त्री, मन्त्री श्री अशोक यादव, कोषाध्यक्ष श्री घनश्याम खेतवानी व सभा के पदाधिकारीगण तथा प्रान्त की अनेक आर्य समाजों से पदाधिकारी सदस्य व महिला कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

इस अवसर पर सभा मन्त्री द्वारा राजसिंह ठाकुर, कारज, तारा चन्द चौक वर्धा, तेजव्रत कोवारे, मदन जामुर्णे, जीवन गोडबोले का स्वागत किया, जिनके प्रयास आर्य प्रतिनिधि सभा कीं विभिन्न स्थानों पर स्थित करोड़ों की भूमि पर से दूसरों का अतिक्रमण हटवाकर सभा की ओर से प्राप्त की। इतना ही नहीं उन पर भव्य भवन भी बनाने की योजना है बर्धा में तो बन भी गया।

कार्यकर्ताओं में संगठन को लेकर भारी उत्साह था। संगठन को और आगे बढ़ाने में सबने अपना पूरा योगदान देने की घोषणा की। बहुत वर्षों बाद ऐसा उत्साह भरा वातावरण सभा में हुआ। सभा प्रधान श्री सत्यवीर जी शास्त्री ने भी सभा को संबोधित किया और संगठन को सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में निरन्तर आगे बढ़ाने में सहयोग का आश्वासन सभी सदस्यों की ओर से दिया। सभा मन्त्री श्री अशोक यादव द्वारा भी सम्मेलन में पूरा सहयोग देने की अपील की गई। जिसे उपस्थित सभी ने पूर्ण सहयोग का व 1500 से अधिक व्यक्ति आने का आश्वासन दिया।

-मंत्री जी

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

पुस्तक परिचय

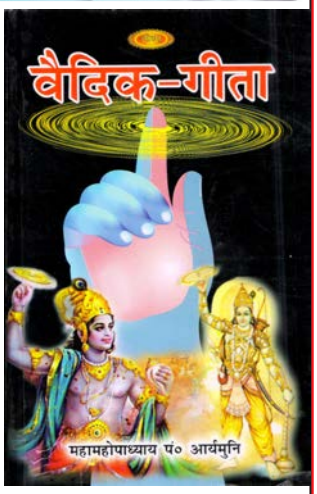

मानव क्या समस्त जीव जगत् बिना कर्म के रह ही नहीं समता। यह कैसे सम्भव है कि मनुष्य कर्म करे ही नहीं। कर्म के अभाव में शव में और चैतन्य मनुष्य में अन्तर क्या रह जायेगा। कर्म तो प्रत्येक प्राणी करता ही है। एक कर्म मनुष्य सामान्य जीवन संचाल के लिये करता है। कुछ कर्म ऐसे हैं जो शारीरिक उन्नति के साथ लोक-परलोक तथा समाज-देश-मानवता के लिये किये जाते हैं। इनके पीछे प्राय: कुछ प्राप्ति की कामना रहती है। यदि कर्म करने के पश्चात् भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकले तो मानव मन विह्वल होकर विचारता है ऐसा क्यों ?

गीता यहीं व्यक्ति को असीम शान्ति प्रदान करती है कि कर्म करने के पश्चात् भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकले तो उदास न होकर विचारना चाहिये-कहां न्यूनता रह गई। फिर कर्म करते रहना चाहिये। कर्म का फल मिलता ही है। हम उसे देख या अनुभव नहीं कर पाते। मानव जीवन की सफलता कर्म (सुकर्म) करते रहने में ही है। गीता की ऐतिहासिकता पर प्रश्न करने वालों से हमारा निवेदन है कि एक वेद मन्त्र के अमूल्य भावों का भाव गीता के सन्देश पर ध्यान केन्द्रित कर जीवन को सफल बनाने की दिशा में अग्रसर रहे। मानव को कल्याणकारी दिशा देने का यत्न करने के उद्देश्य से 'वैदिक गीता' प्रकाशित की गई है ऐसे जीवनोपयोगी साहित्य को जरूर पढ़ना चाहिए तथा अपने ईष्ट-मित्रों को पढ़ने के लिए अवश्य देना चाहिए।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों की सूचनार्थ है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ **'मैं आर्य समाजी कैसे बना'** पुन: आरम्भ कर दिया गया है। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

सम्पादक,
आर्य सन्देश साप्ताहिक,
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती
जन्म शताब्दी पर विशेष

कृष्ण कहो या दीक्षानन्द

.....आचार्य कृष्ण ने दीक्षा मात्र औपचारिकता के लिए नहीं ली थी, अपितु दीक्षा को जीवन में धारण करते हुए मन का निग्रह एवं इन्द्रियों का निग्रह किया अर्थात् मन और इन्द्रियों के दमन से जीवन को आगे बढ़ाया, ईश्वर उपासना के द्वारा जीवन में ऐसी स्थिति प्राप्त की कि जिससे अधिक सूक्ष्मता, दूरदर्शिता एवं विवेक के साथ संसार और उसकी परिस्थितियों का निरीक्षण करके प्राणियों का मार्ग दर्शन किया।.....

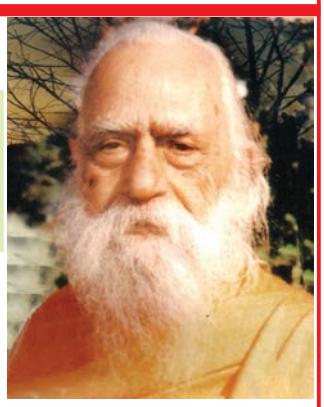

जब कभी हम किसी नाम को सुनते हैं या पढ़ते हैं तब हमें उस नाम से मिलते-जुलते महापुरुषों या अपने परिचितों की याद ताजा हो जाती है, परन्तु कई बार कहने वाले का या लिखने वाले का आशय कुछ और भी हो सकता है। कुछ इसी तरह लेख के शीर्षक में कृष्ण शब्द को देखते ही किसी के मानस पटल पर योगीराज श्री कृष्ण की छवि उभरेगी तो किसी के या हो सकता है कृष्ण के किसी और रूप की कल्पना किसी के मानस पटल पर हिलोरें लेने लगें, क्योंकि कृष्ण शब्द का प्रयोग योगीराज श्री कृष्ण या उसके अन्य रूपों के साथ ही सबसे ज्यादा किया जाता है। परन्तु इस शीर्षक में कृष्ण शब्द का प्रयोग बालक कृष्ण स्वरूप उर्फ आचार्य कृष्ण जी उर्फ स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के लिए किया गया है।

10 जून 1918 तदनुसार विक्रमी संवत् 1975 ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वितीय तिथि को एक नहीं दो सूर्य उदय हुए। द्योलोक का सूर्य प्रतिदिन की भांति उसी दिन सायंकाल अस्त हो गया परन्तु उस दिन मध्यम वर्गीय परिवार में जन्में बालक कृष्ण स्वरूप ने जीवन पर्यन्त अविवाहित रह कर दूसरे सूर्य के प्रतीक रूप में अपने ज्ञान रूपी सूर्य के प्रकाश से समाज को 15 मई 2003 तदनुसार विक्रमी संवत् 2016 वैशाख मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी तिथि तक प्रकाशित एवं लाभान्वित किया।

बालक कृष्ण स्वरूप ने आरम्भिक शिक्षा भटिंडा और लाहौर में प्राप्त की और तदुपरान्त उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रवेश लिया। वर्ष 1943 में गुरुकुल भटिंडा की स्थापना की और 1945 तक उसमें आचार्य पद पर आसीन होकर अपनी सेवाएं प्रदान कीं, इस प्रकार बालक कृष्ण स्वरूप आचार्य कृष्ण बन गए। आप वर्ष 1948 से 1956 तक गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी, मेरठ में आचार्य पद पर आसीन रहे। आप वर्ष 1956 से जीवन के अन्तिम क्षणों तक आर्य समाज के मंचों से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रियता से लगे रहे।

आपके गुरु पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती) जी थे। आचार्य कृष्ण ने 1975 में आर्य समाज के शताब्दी समारोह में स्वामी सत्यप्रकाश जी से संन्यास की दीक्षा ली और आचार्य कृष्ण से स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती बन गए। शब्दकोश में दीक्षा का अर्थ होता है गुरु के पास रहकर सीखी गई शिक्षा का समापन। दीक्षा शब्द दो स्वरों (द एवं क्ष) और दो व्यंजनों (ई एवं आ) के योग से बनता है। द स्वर से दमन, क्ष स्वर से क्षय, ई व्यंजन से ईश्वर उपासना और आ व्यंजन से आनन्द समझने से दीक्षा शब्द का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। इसी आशय को समझते हुए आचार्य कृष्ण ने दीक्षा मात्र औपचारिकता के लिए नहीं ली थी, अपितु दीक्षा को जीवन में धारण करते हुए मन का निग्रह एवं इन्द्रियों का निग्रह किया अर्थात् मन और इन्द्रियों के दमन से जीवन को आगे बढ़ाया, ईश्वर उपासना के द्वारा जीवन में ऐसी स्थिति प्राप्त की, जिससे अधिक सूक्ष्मता, दूरदर्शिता एवं विवेक के साथ संसार और उसकी परिस्थितियों का निरीक्षण करके प्राणियों का मार्ग दर्शन किया जा सके। आपने वासनाओं का क्षय करके जीवन की सोच को उच्चकोटि का बनाने में सफलता प्राप्त की। काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह आदि सभी विकारों को अपने जीवन से दूर कर आनन्द का अनुभव किया और जीवन को धन्य बनाया।

भारत देश के विभिन्न प्रांतों में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने एवं सारगर्भित यज्ञों को सम्पन्न कराने के साथ-साथ मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, डरबन, नैरोबी, केन्या आदि देशों में भी वेद प्रचार की दुंदभी बजाई। आपकी प्रवचन शैली अद्वितीय होने के साथ-साथ अति प्रभावकारी थी, जिससे आपकी बात श्रोताओं के हृदय में सदा के लिए अंकित हो जाती थी। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने आपको योग शिरोमणि की उपाधि देकर सम्मानित किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आपको विद्या मार्तण्ड सम्मान से सम्मानित किया गया। आपने वर्ष 1939 में हैदराबाद आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। फरवरी 2000 में सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर द्वारा आपको 31 लाख की राशि से सम्मानित किया गया। इस 31 लाख की राशि को आपने न्यास को सधन्यवाद समर्पित कर दिया।

वेदों में छिपे गूढ़ रहस्यों को समझने के उद्देश्य से आपने वर्ष 1978 में अपने गुरु के नाम पर समर्पण शोध संस्थान की स्थापना की, जिसमें असंख्य शोध विद्वानों ने अनेकों धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करके उनमें छिपे एक-एक विषय का बारीकी से विश्लेषण कर समाज का मार्ग दर्शन किया।

शब्दकोश में सर्वस्व का एक अर्थ होता है अमूल्य और महत्त्वपूर्ण पदार्थ और दूसरा अर्थ होता है सम्पूर्ण सम्पत्ति। आपको अपने कार्यों के साथ-साथ जीवन में सम्पूर्णता पसन्द थी, यही सम्पूर्णता आपके लेखन में भी झलकती थी। इसी सम्पूर्णता को और सम्पूर्ण बनाने के लिए आपने अपने अधिकांश ग्रन्थों के नाम में सर्वस्व का प्रयोग किया जैसे- नाम सर्वस्व, उपहार सर्वस्व, मर्यादा सर्वस्व इत्यादि। आप द्वारा रचित ग्रन्थ जिनके नाम में सर्वस्व का प्रयोग नहीं किया गया है, ऐसा नहीं है कि उनमें सम्पूर्णता नहीं है। आप द्वारा रचित अन्य ग्रन्थों में जैसे-दो पाटन के बीच, वैदिक कर्मकाण्ड पद्धित, पुरुषोत्तम राम, राजर्षि मनु, स्वाभिमान का उदय आदि में भी पूर्ण सम्पूर्णता है। आपने अपने ग्रन्थों के प्रकाशन के साथ-साथ अन्य विद्वानों की पुस्तकों का समर्पण शोध संस्थान के माध्यम से प्रकाशन एवं सम्पादन भी किया।

स्वामी दीक्षानन्द जी द्वारा लिखित व सम्पादित पुस्तकों की लम्बी सूची से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि स्वामी जी उच्चकोटि के विद्वान थे क्योंकि एक सामान्य विद्वान के लिए इतनी पुस्तकों का लेखन या सम्पादन असम्भव सा प्रतीत होता है। आपने इतनी बड़ी संख्या में पुस्तकों के लेखन और सम्पादन से वैदिक धर्म के अतिरिक्त नैतिक एवं मानवीय पहलुओं का ऐसा अथाह ज्ञान प्राप्त कर लिया था कि वह सभी मत मतान्तरों के अनुयायियों को चुम्बक के समान आकर्षित एवं प्रभावित कर लेते थे। सरल हृदयी उच्चकोटि के विद्वान को जितना भी नमन किया जाये उतना ही अपर्याप्त है, फिर भी स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी को कोटि-कोटि नमन। -**सुरिन्द्र चौधरी**

समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी का जन्म शताब्दी समारोह

दिनांक : 10 जून 2018 (रविवार) समय : दोपहर 3 बजे से सायं 7 बजे

स्थान : मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नई दिल्ली

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, आर्य संन्यासी, अनेक ग्रन्थों के रचियता स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती के 100वें जन्मदिवस पर समर्पण शोध संस्थान के तत्त्वावधान में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस समारोह में आर्य जगत के गणमान्य साधु-संन्यासी, राजनेता, आर्य समाजों के पदाधिकारीगण पधारकर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चा के साथ उनके पुण्य कार्यों का स्मरण करेंगे।

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में पधाकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाकर पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी के कार्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करें।

निवेदक

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल	श्रद्धानन्द शर्मा	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भटनागर
प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	अध्यक्ष	महासचिव
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली			समर्पण शोध संस्थान, साहिबाबाद	

Arya Pratinidhi Sabha America
(Congress of Arya Samajs in North America)

Cordially welcomes you to

28TH ARYA MAHASAMMELAN

An endeavour to spread awareness in society about Vedas and Vedic values

JULY 19 - 22, 2018

Century Center Marriott, Atlanta Georgia, USA

Hosted by Greater Atlanta Vedic Temple

Invited Vedic Scholars and Dignitaries.

H.E. Aacharya Devvrat Ji, Governor, Himachal Pradesh, India
Swami Sumedhanand Ji Saraswati, Member of Indian Parliament

For further info, please visit www.aryasamaj.com/ams
For frequent updates, please like our facebook page: fb.com/vedicamerica/
Sammelan phone: 347-770-ARYA | Email: mahasammelan@gmail.com

Veda Prarthana - II
Regveda - 10

Our Soul is the Master of Our Physical Body - Senses, Mind and Intellect

- Acharya Gyaneshwarya

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः।
अभिशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः।।
- यजुर्वेद 29/43

Rathe tishthan nayati vajinah puro yatra yatra kamayate susharathih.
Abhishoonam mahimanam panayata manah pashchad anu yachchhanti rashmayah.
- Yajur Veda 26:43

Human beings gradually pass through many stages of life: from being a child to youth, an adult, middle-aged, and old, to finally death. Still most persons towards the end of the life are wondering, 'Who am I? Who is what I call me? Is it my body, mind or something else? What is the shape or form of what I call I or me? What are my true strengths and weaknesses? Can I modify my capabilities? Why was I born? What deeds I should perform in life and which I should not? What should I do for my remaining life?' Modern scientists have extensively studied the physical and biological world making many discoveries and inventions along the way to help us live longer and more comfortably. Those who can financially afford it have a whole gamut of creature comforts to make life at least transiently more enjoyable. Still, because modern science does not recognize the soul, or understand many deeper abilities of the mind and intellect, the scientists have been unable to achieve lasting happiness or peace in life themselves or help others find the same.

A person who does not have sufficient control over his mind will often perform harmful or sinful deeds everyday under the influence of greed, lust, anger, infatuation, jealousy or vanity. The person may slip from the right path upon seeing a very beautiful or attractive person, touching somethinng pleasurable and exciting, eating delicious food etc. Some persons are so taken in during such enticements that they lose their usual resolve or mind's judgment and end up performing non-virtuous, unworthy, unjust, sinful and sometimes even heinous deeds. The result of such wrong deeds is that such a person often suffers from shame, fear, ill fame, scorn of others, illness, gets trapped in unwanted relationships or bondages and is consumed by repentance which steadily torments the mind day and night wondering. 'what if I had done things differenty.

This Veda mantra uses the analogy of a charioteer who steers his horses in the right direction and states that an able and competent charioteer by properly controlling the reins of the horses, guides and directs his strong and fast moving horses to the destination he/she desires. Moreover, the charioteer is capable of stopping his horses whenever he/she desires and prevents them from going in the wrong direction. The Veda mantra says, similarly, O human being! Your soul (charioteer) via the mind (reins) is the controller of your senses (horses). Your senses eyes, ears etc. are under the control of your mind and are not self directd. Just as one would like to have strong horses but one would not want the horses to run amuck, similarly, one would like to have powerful senses but under the control of mind and the soul so that the senses do not wander in the wrong directions and do harm to the the person.

Due to ignorance, most persons think that the attraction of various senses towards exciting or pleasurable things is spontaneous and natural, and even if they wanted to stop them, they would not succeed. This belief, however, is wrong because a wise person clearly knows that he (his soul) is the master of his/her mind and senses. The soul alone is conscious, whereas the mind itself is inert because it is made of prakriti (physical matter), the apparent consciousness of the mind is totally dependent on the soul. The mind itself does not raise new thoughts or directs the senses that ability belongs to the soul. The soul finally is responsible for generating good or bad thoughts; the soul alone via the mind directs the senses to give us exciting new sensory input. By self-reflection and guiding one's minds desires and inclinations towards virtue, one can direct one's senses e.g. seeing, hearing etc. towards virtuous things instead of bad or sinful directions, or just making castles in the air.

A compact dise (CD) or a computer memory device (hard drive, memory stick) can record words and pictures of many persons. A capable person, with the help of a CD player or a computer, clicks the right buttons or keys and can listen to the words or see the picture of the desired person's recording Similarly, in our mind are recorded innumerable events; physical appearances, words, and voices of various persons, physical features of various places or scenes, various tastes and smells etc. A wise and capable person retrieves the exact desired information from his/her mind, on the other hand an unwise and incapable person lets his/her mind wander everywhere Moreover, just as machines such as a car, bicycle, camera, fan or computer do not spontaneously start working but require a person to direct and guide them into a desired activity, similarly, activities performed by our bodies, senses, minds and intellect have a driver and guide which is our conscious soul.

When a person has a clear knowledge and understanding that he/she is just not a unique collection of flesh made of prakriti (physical matter) but a conscious eternal soul who is the master of his/her physical body, senses, mind and intellect (all of which are made of prakriti), it transforms his/her life because then he/she feels capable of controlling his/her mind and senses and direct them in virtuous directions. The person then becomes aware of his/her bad habits, deviousness and bad deeds (old bad vasanassanskaars), and recognizing that his/her soul is the master becomes capable of avoiding bad deeds in the future and also uprooting bad sanskars i.e. the desire to do bad deeds in the future. Such a person's various difficulties and obstacles in life, which in the past seemed enoumous like a giant mountain and impossible to deal with, now become easy to deal with and solvable. Such a person further strengthens and steadies his/her soul's will power to do virtuous deeds by practicing pranayam, true yoga-meditation, pledging firm resolves and if there is failure doing real penitence, and finally staying alert to prevent making future mistakes. With true faith in and worship of God and by God's grace he/she receives direct gifts from God the Universal Giver in the form of enlightenment, inner spiritual strength, courage and wisdom. Finally such a person makes not only personal proges in life but becomes capable of helping others around him in the community, society, nation and the world to follow his/her example of living a virtue life. Dear God pleas grant us enlightenment and ability so that we become masters of our minds and senses and ability so that we become masters of our minds and senses and succeed in life by directing our life towards and following virtue.

The following examples describe such repentance: a person who for transient financial gain takes a bribe, is caught in the act and ends up in jail; a man and a woman have a one night casual sexual liaison and end up having an unwanted child.

Sanskars are root mental impressions, inclinations, and memories that have settled in our mind based on our past deeds in this and various previous lives (incarnations) which are often dormant but periodically activate under the right circumstances. Bad sanskars are also called vasanas and kusanskars.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें **अनुवाद** **(54)**

गतांक से आगे....

=इस संसार में.....सर्वोत्तमम् औषधं हास्यम्। =सबसे बढ़िया दवा ''हँसी''।
सर्वासां दीर्घा सम्पत्ति ''बुद्धि''। = सबसे बड़ी सम्पत्ति ''बुद्धि''।
सर्वोत्तमं शस्त्रास्त्रं धैर्यम्। = सबसे अच्छा हथियार ''धैर्य''।
सर्वोत्तमा सुरक्षा विश्वासः। = सबसे अच्छी सुरक्षा ''विश्वास''।
आनन्दस्य च वार्ता इयम् अस्ति यत् एतत् सर्वं निःशुल्कम् अस्ति।
= और आनंद की बात यह है कि ''ये सब निःशुल्क हैं''।।

वाक्याभ्यासः 1. तस्मै बालकाय दुग्धं देहि। = उस बच्चे को दूध दो ।
2. एतस्मै मुनये धनं यच्छ। = इस मुनि को धन दो।
3. सूर्याय जलं यच्छ। = सूर्य को जल दो।
4. कस्मैचित् नृपाय धनं मा ददातु। = किसी राजा को धन मत दीजिये।
5. यस्मै बालकाय फलं यच्छसि.... = जिस बच्चे को फल देते हो....
6. तस्मै हि पुष्पम् अपि देहि। = उसे ही फूल भी दीजिये।
7. कस्मिन् विद्यालये पठसि ? = किस विद्यालय में पढ़ती हो ?
8. यः बालकः विद्यालयं न गच्छति तं पिता दण्डयति।
= जो बच्चा विद्यालय नहीं जाता उसको पिता दण्डित करता है। - ***क्रमशः***

-आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, **मो. 9899875130**

प्रेरक प्रसंग

ईश्वरीय ज्ञान

अपनी मृत्यु से पूर्व स्वामी रुद्रानन्दजी ने 'आर्यवीर' साप्ताहिक में एक लेख दिया। उर्दू के उस लेख में कई मधुर संस्मरण थे। स्वामीजी ने उसमें एक बड़ी रोचक घटना इस प्रकार से दी। आर्यसमाज का मुसलमानों से एक शास्त्रार्थ हुआ। विषय था ईश्वरीय ज्ञान। आर्यसमाज की ओर से तार्किक शिरोमणि पण्डित श्री रामचन्द्रजी देहलवी बोले। मुसलमान मौलवी ने बारबार यह युक्ति दी कि सैकड़ों लोगों को कुरआन कण्ठस्थ है, अतः यही ईश्वरीय ज्ञान है। पण्डितजी ने कहा कि कोई पुस्तक कण्ठस्थ हो जाने से ही ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो जाती। पंजाबी का काव्य हीरवारशाह व सिनेमा के गीत भी तो कई लोग कण्ठ कर लेते हैं। मौलवीजी फिर भी यही रट लगाते रहे कि कुरआन के सैकड़ों हाफिज हैं, यह कुरआन के ईश्वरीय ज्ञान होने का प्रमाण है।

श्री स्वामी रुद्रानन्दजी से रहा न गया। आप बीच में ही बोल पड़े किसी को कुरआन कण्ठस्थ नहीं है। लाओ मेरे सामने, किस को सारा कुरआन कण्ठस्थ है ?

इस पर सभा में से एक मुसलमान उठा और ऊँचे स्वर में कहा, ''मैं कुरआन का हाफिज हूँ।''

स्वामी रुद्रानन्दजी ने गर्जकर कहा, ''सुनाओ अमुक आयत।''

वह बेचारा भूल गया। इसपर एक और उठा और कहा, ''मैं यह आयत सुनाता हूँ।'' स्वामीजी ने उसे कुछ और प्रकरण सुनाने को कहा वह भी भूल गया। सब हाफिज स्वामी रुद्रानन्दजी के सम्मुख अपना कमाल दिखाने में विफल हुए। कुरआन के ईश्वरीय ज्ञान होने की यह युक्ति सर्वथा बेकार गई।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली का 50वां वार्षिकोत्सव (स्वर्ण जयन्ती समारोह) सम्पन्न

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 ने अपना ऐतिहासिक स्वर्ण जयन्ती समारोह 9 से 15 अप्रैल 2018 के बीच धूमधाम से सम्पन्न किया। मुख्य समारोह 15 अप्रैल प्रातः यज्ञ की पूर्णाहूति से आरम्भ हुआ तथा शेष कार्यक्रम निर्माणाधीन वैदिक केन्द्र के स्थान पर लगाए गये भव्य पंडाल में

सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन एम.डी.एच. एवं प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली थे। स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती और श्रीमती संतोष मुंजाल ने आशीर्वाद दिया। श्रीमती शिखा राय, नेता सदन, द.दि.न. निगम, श्री सुभाष आर्य, पूर्व महापौर, श्री रामनाथ सहगल, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्री आनन्द चौहान, जनरल सेकेट्री, रितनन्द बलदेव एजुकेशन फाउण्डेशन और डायरेक्टर एमिटि, ठाकुर विक्रम सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्रीमती सुमन मुंजाल, श्री सुनील मुंजाल, टंकारा ट्रस्ट के श्री अजय सहगल, सनातन धर्म सभा ग्रेटर कैलाश-2 के प्रधान श्री रजनीश गोयनका, श्री गुनमीत सिंह, इत्यादि महापुरुषों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम में वैदिक केन्द्र और अतिथि गृह का औपचारिक नामकरण किया गया। वैदिक केन्द्र का नाम बृजमोहन मुंजाल वैदिक केन्द्र और अतिथि गृह का नाम, महाशय धर्मपाल अन्तर्राष्ट्रीय अतिथि गृह रखा गया। आर्य समाज में चल रही उपनिषद् की कक्षाओं में उपस्थित रहने वाले व्यक्तियों को प्रमाण पत्र दिये गये। डॉ. वागीश आचार्य और डॉ. वेदपाल जी ने उपस्थित श्रोताओं को अपने ज्ञानवर्धन प्रवचन से प्रभावित किया। मंच संचालन श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा ने किया।

श्री अभिमन्यु खुल्लर सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी कॉलेज प्रबंकत्री समिति के ओर से वैदिक विद्वान श्री अभिमन्यु खुल्लर जी को वैदिक सिद्धांतों व मूल्यों के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए महात्मा हंसराज जयंती समारोह 21 अप्रैल को परेड ग्राउंड, पंचकुला में सम्मानित किया गया।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

अंग्रेजी अनुवादक की आवश्यकता

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को हिन्दी-संस्कृत में लिखित वैदिक साहित्य की मनुस्मृति आदि पुस्तकों के अंग्रेजी अनुवाद करने हेतु आर्यसमाज की मान्यताओं की जानकारी रखने वाले सुयोग्य वैदिक विद्वान की आवश्यकता है। वेतन योग्यता एवं अनुभव के अनुसार। इच्छुक महानुभाव अपना डायोडाटा **महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर या **aryasabha@yahoo.com** पर प्रेषित करें। – ***महामन्त्री***

चुनाव समाचार

आर्यसमाज केशव पुरम्, दिल्ली
प्रधान – श्री सत्यवीर पसरीचा
मंत्री – श्री मनवीर सिंह राणा
कोषाध्यक्ष – श्री प्रताप नारायण

आर्यसमाज नोएडा, सै. 33 (उ.प्र.)
प्रधान – श्रीमती गायत्री मीना
मंत्री – श्री जितेन्द्र सिंह
कोषाध्यक्ष – श्री आर. एल. लावनिया

महिला आर्यसमाज नोएडा, सै. 33 (उ.प्र.)
प्रधान – श्रीमती ओमवती गुप्ता
मंत्री – श्रीमती आदर्श बिश्नोई
कोषाध्यक्ष – श्रीमती सन्तोष लाल

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद
उद्घाटन : सोमवार 4 जून समापन : रविवार 17 जून, 2018

आर्यजन दोनों समारोहों उद्घाटन एवं समापन के अवसर पर अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्य वीरों का अपना आशीर्वाद प्रदान करें। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें- **ऋषिपाल आचार्य, संयोजक, मो. 09811687124**

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आरत्मरक्षण शिविर

समापन : 3 जून, 2018 : आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, मुट्ठीगंज इलाहाबाद (उ.प्र.)

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्य वीरांगनाओं का अपना आशीर्वाद प्रदान करें। **-साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका**

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

एम.डी.एच. इंटरनेशनल स्कूल, सैक्टर-6, द्वारका, नई दिल्ली
उद्घाटन समारोह : 3 जून, 2018 समापन समारोह 10 जून 2018

आर्यजन दोनों समारोहों उद्घाटन एवं समापन के अवसर पर अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्य वीरांगनाओं का अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

– श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में 500 आर्यवीरों का

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 15 से 24 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद
उद्घाटन : रविवार 17 जून दीक्षान्त : रविवार 24 जून, 2018

आर्यजन अपने बच्चों को शिविर में भाग लेने हेतु अवश्य भेजें तथा दोनों समारोहों उद्घाटन एवं समापन के अवसर पर अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्य वीरों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। – ***जगबीर आर्य, संचालक, 9810264634***

आर्य वीरदल हरियाणा द्वारा जून मास में चरित्र निर्माण शिविर

आर्यवीर : 1-5 जून : गुरुकुल कुरुक्षेत्र, 2-10 जून: आर्यसमाज बाढ़ड़ा (भिवानी), 3-10 जून : आर्य पब्लिक स्कूल गुड़गांव, दयानन्द मठ रोहतक, डी.ए.वी. स्कूल सै. -15 सोनीपत, आर्यसमाज जुआ सोनीपत, रा.प्रा.स्कूल (गलियावास, रेवाड़ी)। 5-10 जून : डी.ए.वी. स्कूल करनाल, 11-17 जून : रा.व.मा.विद्यालय माजरा भालकी रेवाड़ी, सी.आर.मैमो. स्कूल रोजूवास रेवाड़ी, न्यू इरा प.स्कूल गुड़यानी (रेवाड़ी)। 18-25 जून : दयानन्द स्कूल फिरोजपुर झिरका (मेवात), गुरुकुल झज्जर।
आर्य वीरांगना शिविर : 2-10 जून : आर्य समाज मॉडल टाउन गुरुग्राम, 3-10 जून : थारूराम आर्य कन्या विद्यालय फरीदाबाद, 6-11: गुरुकुल कुरुक्षेत्र, एवं 11-17 जून: वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक। – ***वेद प्रकाश आर्य, मंत्री***

राजौरी पुंछ में वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल, राजौरी पूंछ के तत्त्वावधान में वेद प्रचार एवं 37वां वार्षिकोत्सव 6 से 8 अप्रैल के बीच सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पं. योगराज शास्त्री लुधियाना वाले और सभा प्रधान एवं आर्य समाज लम्बेड़ी (नौशहरा) के प्रधान श्री कुलदीप जी ने ओ३म् की झण्डी दिखाकर वेद प्रचार वाहन को प्रस्थान किया। इस वाहन ने विभिन्न गावों में भ्रमण करते हुए श्री नरेश जी, श्री राम प्रकाश जी, श्री जगदीश लाल जी एवं श्री महावीर जी के घर गांव टोकवन्याड़ (सुन्दरवनी) एवं आर्य समाज भजन्वा (नौराहरा), आर्य समाज पंचतूत (जम्मू-अखनूर) में भजन, प्रवचन के कार्यक्रम सम्पन्न किये। भजन-सत्संग श्री ओम प्रकाश द्वारा प्रस्तुत किया गया। वेद प्रचार रथ आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर की ओर से तैयार की गई थी। – ***मंत्री जी***

रोमा लेखकों को 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट

सर्बिया गणराज्य से पधारे दो प्रतिष्ठित रोमा लेखकों को आर्य समाज हनुमान रोड की ओर से 'सत्यार्थ प्रकाश' (अंग्रेजी संस्करण) की प्रतियां भेंट की गई। अंग्रेजी-हिन्दी में अनेक ग्रंथों के लेखक पद्मश्री रोमा-विशेषज्ञ डॉ. श्याम सिंह शशि तथा आर्य समाज के विद्वान पुरोहित डॉ. कर्णदेव शास्त्री ने ये पुस्तकें भेंट की। रोमा लेखक बैराम लिखित व जलाटोमिर योवनाविच, अध्यक्ष सर्बिया लेखक संघ ने कहा कि ग्रंथ (सत्यार्थ प्रकाश) का अनुवाद सर्बिया तथा रोमानी भाषा में किया जाएगा।

डॉ. शशि आजकल इण्टरनेशनल रोमा कल्चरल यूनिवर्सिटी बेलग्रेड (सर्बिया गणराज्य) के कुलाधिपति हैं। एक हजार वर्ष पहले रोमा भारत छोड़कर गए प्रवासी भारतीय हैं जिनकी भाषा हिन्दी के समान है जिसमें वैदिक ग्रंथों तथा अन्य भारतीय संस्कृति की पुस्तकों के अनुवाद कराने के लिए डॉ. शशि प्रयत्नशील हैं। लगभग पांच करोड़ जनसंख्या का यह भारतवंशी समुदाय भारत को 'बारोथान' (अपने पूर्वजों का बड़ा देश) कहलाता है।

-प्रो. जे.के.शर्मा,
मीडिया रिसर्च सेन्टर, दिल्ली

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31 मई/1 जून, 2018
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू.(सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 मई, 2018

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वि जन्मशताब्दी समारोहों के शुभारम्भ के रूप में आयोजित होगा

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018

25-26-27-28 अक्तूबर, 2018 : स्वर्ण जयन्ती पार्क, सै.-10, रोहिणी, दिल्ली

प्रतिष्ठा में,

❖अभी से महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं आर्यजन। ❖ इन तिथियों में कोई भी आर्य समाज अपना कार्यक्रम आयोजित न करें। ❖ आर्यसमाजें अपने कार्यक्रमों हेतु प्रकाशित पत्रक में आर्य महासम्मेलन की जानकारी अवश्य करें। ❖ जो युवा कार्यकर्ता 23 अक्टूबर से 29 अक्टूबर 2018 तक सम्मेलन के आयोजन में समय दे सकें, वे जल्द से जल्द सूचित करें। ❖ आर्यजन अपने महासम्मेलन सम्बन्धी पत्र कम से कम तीन प्रतियों में भेजें। इनमें मुख्यत: तीन समितियों के संयोजकों- परिवहन, बाजार और आवास के नाम अलग-अलग सम्बोधित होने चाहिए। **सम्मेलन में उपलब्ध नि:शुल्क सुविधाएं :** दिल्ली में पहुंचने पर सम्मेलन स्थल तक पहुचने की व्यवस्था। ❖ सम्मेलन में आवास, भोजन व पंजीकरण की व्यवस्थाएं। विदेश से आने वाले महानुभावों के लिए विशेष सुविधायुक्त आवास व्यवस्था नि:शुल्क होगी।

विश्व के सभी आर्यजन आर्य महासम्मेलन में सादर आमन्त्रित हैं। समस्त पाठकों, आर्यसमाज के अधिकारियों व सदस्यों से अपील है कि महासम्मेलन की सूचना अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति तक अवश्य पहुंचाएं।

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

71, 00, 000 + ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

- महामन्त्री

देश और समाज विभाजन के षड्यन्त्र का पर्दाफास
आओ! जानें मनुस्मृति का सच
स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

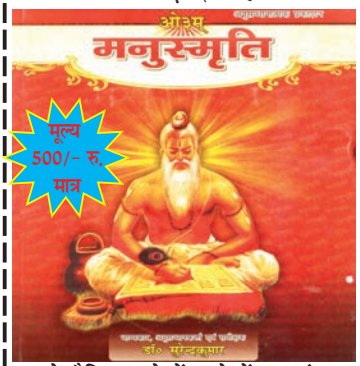

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।
मूल्य : ~~600~~/- 500/-
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018
नवीनतम सूचनाओं व जानकारियों हेतु जुड़ें व्हाट्सएप्प पर और साझा करें विचार

व्हाट्सएप्प पर आर्य समाज से जुड़ें हमारा नंबर Save करें
9540045898
अपना नाम City और Yes लिख कर भेजें

नोट -हमारा नंबर Save करने के बाद ही आप Message रिसीव कर पाएंगे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह